पलकों के बगैर आंखों की सुरक्षा

कई जंतुओं की आंखों पर हमारे जैसी पलकें नहीं होतीं। तो इसका मतलब है कि वे आंख नहीं मार सकते। ज़ाहिर है वे पलक नहीं झपका सकते। शायद आंखों में आंखें डालकर घूरने की प्रतियोगिता हो तो वे ज़रूर बाज़ी मार ले जाएंगे। मगर पलकें न होने का ज़्यादा गंभीर असर यह होता है कि यदि कोई कचरा वगैरह उड़कर उनकी ओर आए तो वे आंख को बंद करके सुरक्षा नहीं कर पाएंगे। ऐसे जंतु क्या करते हैं?

ऐसा ही एक जीव है गिटार मछली। गिटार मछली नाम इसलिए पड़ा क्योंकि इसका शरीर मोटे तौर पर गिटार जैसा दिखता है। यह मछली ऐसे पानी में रहती है जहां काफी रेत वगैरह होती है। अब यदि कोई दूसरा जंतु रेत में खलबली मचाए तो इन्हें अपनी आंखों के बचाव में कुछ तो करना होगा। गिटार मछली ने इसका एक अनोखा तरीका निकाला है।

जैसे ही आसपास रेत का गुबार उठता है, गिटार मछली अपनी आंखों को पूरा का पूरा अपने सिर में धंसा लेती है। ऐसा होने पर आंख के स्थान पर एक गड्ढा भर बचा रहता है। फिर खतरा टलने पर आंखें अपनी जगह वापिस आ जाती हैं।

अब शोध से पता चला है कि अपनी इस आंख चुराने की क्षमता के लिए यह मछली एक विशेष मांसपेशी की शुक्रगुज़ार है। शोधकर्ताओं ने हाई स्पीड वीडियो की मदद से गिटार मछली का अवलोकन किया तो देखा कि यह अपनी आंखों को 4 से.मी. तक अंदर ले जा सकती है। किसी भी अन्य रीढ़धारी जंतु के मुकाबले यह कहीं ज़्यादा है। मेंढक, डॉल्फिन, मडस्किपर भी अपनी आंखों को अंदर कर लेते हैं मगर उनकी इस क्रिया में अलग मांसपेशियां मददगार होती हैं। वैसे गिटार मछली के समान क्रिया कई अन्य जंतुओं में भी देखी गई है, जैसे कुछ रे मछलियां वगैरह। तो शोधकर्ताओं को यहां आगे शोध के लिए मसाला नज़र आ रहा है। ***(स्रोत फीचर्स)***